ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 124-126

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री चेतना

1. मुकेश पुवारे
2. डॉ0 विकास शर्मा

1. शोध अध्येता, 2. शोध निर्देशक– हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय (दिल्ली) भारत

Received-06.11.2023, Revised-12.11.2023, Accepted-18.11.2023 E-mail: mukeshpuware@gmail.com

सारांश: *भारतीय समाज में नारी की स्थिति परिवर्तनशील रही है, कभी उसे दासी समझकर उसकी अवहेलना की है, तो कभी समाज ने उसकी प्रशंसा की है। भारत में नारी की स्वतंत्रता और जागरण संबंधी आंदोलन आरंभ हुए और नारी में स्व की भावना जागृत होने लगी। अब वहा अपनी अस्मिता को जानने लगी। वे अब स्वयं संघर्ष करती है और अधिकारों को प्राप्त करती है। प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री के विविध आयाम दिखाई देते हैं। स्त्री के जीवन से जुड़ी समस्याएं, संघर्ष, स्वावलंबन, स्वतंत्रता, अधिकार, चेतना , अस्मिता और अस्तित्व आदि स्त्री चेतना के कई रूप आते हैं। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में समाज की स्त्री समस्याओं को प्रस्तुत किया है।*

कुंजीभूत शब्द– स्त्री चेतना, संघर्ष, अस्मिता, अस्तित्व, समाज, स्वावलंबन, स्वतंत्रता, अधिकार, भारतीय समाज, संकल्प, विचार।

चेतना से तात्पर्य ऐसी ज्ञानमूलक मनोवृति, जिसमें जीव आंतरिक अनुभूतियां और ब्रह्म घटनाओं के तत्वों से अनुभव प्राप्त कर ऐसी स्थिति में आ जाते हैं, कि बुरें परिणाम या बातों से बचकर अच्छी बातों की और प्रवृत्त हो सकें। सोच समझकर किसी बात की और ध्यान देना या सुविचार ही चेतना है। चेतना मानव की प्रमुख विशेषता है चेतना के बिना मनुष्य जीवित नहीं बल्कि मृत के समान है। चेतना से ही हमारा जीवन गति व विकास करने की शक्ति लेता है। चेतना जागरूकता लाने में अहम भूमिका निभाता है। यह कह सकते हैं कि "चेतन मानस की प्रमुख विशेषता चेतना है, अर्थात वस्तुओं, विषयो व्यवहारों का ज्ञान।"[1] इस तरह हम कह सकते हैं कि चेतना व्यक्ति की वह केंद्रीय शक्ति है जो अनुभूति, विचार, चिंतन, संकल्प, कल्पना आदि क्रियाएं करती है।

भारतीय इतिहास में स्त्री का स्थान सर्वोच्च रहा है। उस समय नारी शिक्षा और आत्मविश्वास के मामले में पुरुष के बराबर थी। एक मानवीय इकाई के रूप में सभ्यता और संस्कृति के सर्वांगीण विकास में स्त्रियों को योग्य स्थान प्राप्त था। विधि कर्मकांड में स्त्री को आगे रखा जाता था। बालिकाओं की गतिविधियों में अंकुश नहीं लगा था। उस काल में गार्गी, अनुसूया और मैत्रीयी आदि स्त्रियां शास्त्रार्थ करती थी। वैदिक काल के पश्चात स्त्री की स्वतंत्रता पर रोक लगा दिया गया। अब वे समाज घर परिवार में उपेक्षित और प्रताड़ित थी। उन्हें केवल उपभोग की वस्तु समझा जाने लगा। यह वही भूमि थी जहां दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, जैसी देवियां मैत्रीयी, गार्गी, आपला, लोपामुद्रा जैसी विदुषी नारियाँ जन्मी "यत्र नार्यस्ते पूज्यंते रमंते तत्र देवता।" का उद्घोष कहीं गुम हो चुका था। इसी संदर्भ में अरविंद जैन लिखते हैं – "सामंती व्यवस्था में नारी एक वस्तु है, संपत्ति है, संभोग और संतान की इच्छा पूरी करने वाली मादा है।"[2]

पुरुष प्रधान समाज में वर्षों से पुरुषों का प्रभुत्व रहा है। स्त्रियों को लंबे समय तक अनेक अधिकारों से वंचित रखा गया। मान मर्यादा के बंधनों में बांधकर अनुशासित जीवन जीने को विवश किया। उन्हें स्वयं निर्णय लेने का अधिकार भी नहीं था। परंतु जब स्त्रियां अपनी कारुणिक दशा पर प्रशन करने लगी। अपनी हक और दायित्व की बात करने लगी। अपने अस्तित्व को शक्तिशाली रूप से सम्मुख रखने लगी तब पुरुष प्रधान समाज में प्रश्न खड़े होने लगे। सिमोन द बोउअर के अनुसार, "स्त्री पुरुष प्रधान समाज की कृति है। अपनी सत्ता को बनाए रखने के लिए पुरुष उसे जन्म से ही अनेक नियमों के सांचे में ढालता चला गया। जहां उसका व्यक्तित्व दबता चला जाता है।"[3]

उपन्यासकार प्रेमचंद ने नारी की न सिर्फ दयनीय स्थिति को अपनी रचनाओं में उद्धृत किया, बल्कि नारी और पुरुष के समान अधिकार की बात भी कहते हैं। उन्होंने अपनी अधिकांश रचनाओं में स्त्री जीवन के भिन्न–भिन्न आर्थिक प्रकार की सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, धार्मिक और सांस्कृतिक समस्याओं को अभिव्यक्त किया। स्त्री की अस्मिता जीवन संघर्ष, दुःख दर्द तथा अत्याचार के प्रति विद्रोह करना तथा स्त्री चेतना को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। उनके उपन्यासों के नारी पात्र दिन दुखी तो हैं ही वह सशक्त भी है, वह अपने साथ होने वाले अन्याय, अत्याचार के खिलाफ लड़ने में सक्षम भी हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में स्त्री को अबला – सबला दोनों रूपों में चित्रित किया है। उन्होंने स्त्री को दुर्बल नहीं, बल्कि सशक्त और सफल बनाया। डॉ. सुरेश सिन्हा कहते हैं "जिस नए युग में नारी के ऊपर से उस भौंडे, कृत्रिम और अविश्वास पूर्ण आवरण को उतार कर जिसे प्रेमचंद पूर्व कल के उपन्यासकारों ने अपनी तथा कथित आदर्शवादी एवं सुधारवादिता के जोश में आकर पहना दिया था और जिसके फल स्वरुप नारी का स्वरूप बोझिल ही नहीं हो गया था, आडंबरपूर्ण और अविवेकपूर्ण सा प्रतीत होने लगा था। नारी की आत्मा को उसकी तमाम अच्छाइयों और बुराइयों के साथ प्रेमचंद ने पहली बार यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया।[4]

मातादीन अपनी रखेल चमारिन सिलिया को जब घर से बाहर कर देता है तब सिलिया को धनिया अपने घर में पनाह देती है। देवर हीरा ईर्ष्यावश गाय का को मार देता है। तब वह होरी की झूटी गवाही का विरोध करती है, वह गाय के हत्यारा चाहे उसका देवर क्यों न हो उसे थाने भिजवाने की बात करती है। वह कहती है "सबेरा होते ही लाला को थाने नहीं पहुंचा दूं तो असल बाप की नहीं।"[5] पुलिस और गांव के पंच होरी से घूस मांगते हैं परंतु धनिया निर्भीकता से विरोध करती है। होरी जब अंगोछी में पैसे लेकर दरोगा की ओर बढ़ता है तभी धनिया साहस के साथ रुपये को उसके हाथ से झटके के साथ छुड़ा लेती है, झटका के कारण सारे पैसे जमीन पर गिर जाते हैं और वह गुस्से में कहती है" यह रुपए कहां लिए जा रहा है, बता? भला चाहता है तो सब रुपए लौटा दे, नही कहे देती हु।"[6] वही पुत्र गोबर विधवा झुनिया को उसे घर ले आता है और अपने घर के दरवाजे पर छोड़ कर शहर चला जाता है,

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

परंतु धनिया समाज और बिरादरी के नियम, कानून किसी की परवाह किए बिना साहस के साथ झुनिया को अपने घर में शरण देती है। इस बात से नाराज गांव के पंचों ने होरी पर सौ रुपिए तथा बीस मन अनाज दंड किया, परंतु धनिया बिरादरी से निकाल दिए जाने की धमकियों से नहीं डरती तथा पंचों के अन्याय और दंड का विरोध करते हुए धनिया कहती है– पंचो। गरीबों को सता कर सुख ना पाओगे। इतना समझ लेना , हम मिट जायेंगे कौन जाने इस गांव में रहे या ना रहे, लेकिन मेरा सराप तुमको भी जरूर ही जरूर लगेगा।"[7] धनिया साहसी और निडर है। सत्य और अन्याय से कभी उसने समझौता नहीं किया। वह प्रारंभ में ही अपने पति होरी को जमीदार की खुशामद करने से रोकती है, वह जमीदारों का विरोध करती है। उसका मानना है कि हमने जमीदार के खेत जोते हैं तो वह अपना लगान लेगा उसकी खुशामद हम क्यों करें। उसके तलवे क्यों सहलाये जब जमीदार की खुशामद करने पर भी उसकी हालत अन्य किसानों से बेहतर नहीं है तो हम उनकी इतनी खुशामद क्यों करें।

प्रेमचंद कर्मभूमि उपन्यास की पात्र सुखदा के माध्यम से स्त्री चेतना को एक नई दिशा प्रदान करता है। वह साहसी, स्वाभिमानी, आत्मविश्वासी है सुखदा समाज एवं परिवार में मौजूद प्रश्नों को गंभीरता और दृढ़ता के साथ उठाती है। वह स्त्री पुरुष के लिए समान व्यवहार की समर्थक भी है। वह समाज में देखती है कि महिला को पुरुषों से हीन समझा जाता है महिलाओं को कोई अधिकार नहीं है, यह सोचती हुई कहती है "समाज और धर्म के सारे बंधनों को तोड़ कर फेंक दे। ऐसे आदमियों की सजा यही है कि उनकी स्त्रिया भी उन्हीं के मार्ग पर चलें। तब उनकी आखें खुलेगी और उन्हें ज्ञात होगा कि जलना किसे कहते हैं। एक में कुल मर्यादा के नाम से रोया करू लेकिन यह अत्याचार बहुत दिनों तक ना चलेगा। अब कोई इस भ्रम में ना रहे कि पति चाहे जो करें उसकी स्त्री उसके पांव धोकर पियेगी, उसे अपना देवता समझेगी, उसके बाद अब आएगी और वह उसे हंसकर बोलेगा, तो अपनी भाग्य को धन्य मानेगी। वह दिन अब गए।"[8] प्रेमचन्द स्त्री को अन्याय के प्रति विद्रोही बनाकर उसे पूर्ण स्वतंत्र बनाना चाहते हैं। वह इतनी बुद्धिमती है कि उन्होंने एकांकी कुत्सित बेड़ियों को छिन्न–भिन्न कर अपने लिए एक अलग कार्यक्षेत्र का निर्माण कर लिया है। वे खुद को पुरुषों से कुछ कम स्वाधीन नहीं समझती। वे इतनी प्रबुद्ध है कि अपने को पराधीन बनाए जाने के साजिश को अच्छी तरह समझती है। जो बर्बर और अन्यायी है अब ऐसे पुरुषों की दासी बनकर उनके बताए मार्ग पर चलना नहीं चाहती है। इसी तरह नैना भी सेवा परायण स्त्री पात्र है, वह दीन दुखियों की सेवा करना ही सबसे धर्म मानती है। जब वह देखती है। कि मील के मजदूरों को जमीन देने के विषय को लेकर हड़ताल हो रही है, तथा उसके ससुर और पिता का दमन चक्र चल रहा है और कोई भी नेतृत्व करने वाला नहीं होता है तब वह क्रांतिकारी की तरह आगे बढती हुई स्वयं झंडा उठा लेती है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने अंग्रेजी शासन के विरोध में पुरुषों के साथ–साथ स्त्रियों को भी आगे किया है। 'कर्मभूमि' उपन्यास की एक ग्रामीण बुजुर्ग स्त्री पात्र सलोनी है। बुजुर्ग होते हुए भी उसके मन में आजादी एवं अधिकार के प्रति युवाओं से भी अधिक जोश एवं जुनून है। गाँव के जमीदार महन्त जी ठाकुरद्वारें के उत्सव की पूर्ति के लिए बराबर लगान वसूल करते थे लगान इतना बढ़ गया कि सारी उपज लगान के बराबर भी न पहुंचती थी। गाँव वाले तंग आकर जमींदार के सामने फरियाद करने का निर्णय करते हैं। गाँव के चौधरी गूदड़ भी इसके लिए तैयार हो जाते हैं ये कहते हैं कि यदि महन्त जी लगान माफ करते हैं, तो ठीक, नहीं तो मजदूरी करने के अलावा कोई उपाय नहीं। जहाँ गाँव के सारे पुरुष जमीदार के शोषण के आगे हार जाते हैं, वहीं वृद्धा सलोनी गाँव वालों के अधिकारों की रक्षा करने की पहल करती हुई कहती है–"खेत क्यों छोड़ें? बाप–दादों की निशानी है, उसे नहीं छोड़ सकते। खेत पर परान दे दूंगी। एक था, तब दो हुए, तब चार हुए, अब क्या धरती सोना उगलेगी।"[9] जैसा कि प्रेमचन्द की विशेषता रही है कि उनके उपन्यास के पुरुष पात्र जब भी कमजोर पड़कर अत्याचार के सामने घुटने टेकते हैं, तब उनकी नारी पात्र ऐसी विकट परिस्थितियों का बहुत ही निडरता के साथ सामना करती हैं एवं सफलतापूर्वक अपने अधिकारों की रक्षा करती है।

रंगभूमि की सोफियां दबंग स्त्री पात्र है जो राजनीति में पुरुषों के साथ कंधें से कंधा मिलाकर चलती है। प्रेमचंद स्त्री को पुरुष से श्रेष्ठ समझते थे और इसी में स्त्री पुरुष का कल्याण समझते थे। 'सेवासदन' उपन्यास की नायिका सुमन की इच्छाओं और स्वाभिमान ने भले ही उसे पातन की ओर अग्रसर कर दिया, परंतु वही सुमन अपने त्याग एवं सेवा धर्म से समाज में एक नयी दिशा प्रदान करती है। सुमन को गजानन्द अनाथालय की संचालिका बनता है, जिसमें अधिकांश वेश्याओं की पुत्रियां रहती है। वह अपने पूरे तन मन से बच्चियों की सेवा करती है। गजानंद सुमन के इन आंतरिक गुणों की प्रशंसा करते हुए कहता है "मैंने बहुत ढूंढा , पर कोई ऐसी महिला न मिली जो यह काम प्रेम भाव से कर सके। वात्सल्य के बिना यह उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। ईश्वर ने तुम्हें ज्ञान विवेक दिया है। तुम्हारे हृदय में दया है, करुणा, वात्सल्य है, धर्म है और तुम्ही ही इस कर्तव्य का भार संभाल सकती हो।"[10] प्रेम त्याग सेवा– भावना दया, करुणा आदि आदि गुणों की अपेक्षा स्त्री से ही की जा सकती है। स्त्री के यही गुण पुरुषों को सही मार्ग पर लाते हैं। 'निर्मला' उपन्यास की स्त्री पात्र कल्याणी कहीं–कहीं अपने विद्रोही रूप में दिखाई देती है। वह अपने पति उदयभानु लाल से अधिक उलझी एवं दूरदर्शी महिला है, किंतु उदयभानु को पुरुष होने का अहम हावी रहता है, वह अपनी पत्नी कोई बात नही मानता हैं। उसकी बातो की अवहेलना करता हुआ कहता है कि– "ऐसे मर्द होंगे जो औरतों के इशारों पर नाचते होंगे।" कल्याणी उनकी इन धमकियों के आगे सिर नहीं झुकती बल्कि उसका विरोध करते हुए कहती है" तो ऐसी स्त्रियां भी होगी जो मर्दों की जूतीया सहा करती है"[11] प्रेमचंद के उपन्यासों की स्त्री पात्र दबी– कुचली एवं खुद को पति की दासी बनकर रहने वाली नहीं, बल्कि शोषण एवं अन्याय के विरुद्ध खड़ी होने वाली सशक्त नारी हैं।

'प्रतिज्ञा' उपन्यास की नारी पात्र सुमित्रा है जो पति से अधिक बुद्धिमान, सुन्दर एवं शिक्षित है परन्तु उसका पति उसका शोषण करता है, उस पर शासन चलाता है उसे अपने पैर की जूती के बराबर समझता है खुद तो निठल्ला घूमता है और पत्नी से उम्मीद करता है कि वह उसके आज्ञा का पालन करे। एक पतिपरायण हिन्दू स्त्री की भाँति उन आदर्शों पर चले। सुमित्रा कहती है की "मैं तो आप

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

ही कहती भाई! स्त्री पुरुष के पैरों की जूती के सिवाय और कुछ है ही क्या? पुरुष चाहे जैसा हो, चोर हो, ठग हो, व्यभिचारी हो. शराबी हो, स्त्री का धर्म है कि उसकी चरण–रज धोकर पीये मैंने कौन सा अपराध किया है, जो उन्हें मनाने जाती, जरा यह भी तो सुनूँ।'' 12 सुमित्रा के इस व्यंग्य के माध्यम से स्त्री जीवन की सम्पूर्ण विषमताओं की झलक देखने को मिल जाती है। इसी प्रकार 'गबन'' उपन्यास की जालपा का नाम आता है। जालपा का पति रमानाथ भय एवं पैसों के लालच में आकर झूठी गवाही दे देता है, जिससे कुछ निर्दोष लोगों को फाँसी की सजा सुना दी जाती है। जालपा को जब इस घटना के बारे में जानकारी होती है, तो वह अपने पति रमानाथ की भर्त्सना करती है और उसके द्वारा झूठी गवाही के माध्यम से कमाई गई रकम को ठोकर मारकर उन परिवारों की देख–भाल दिन रात करने लगती है, जिन परिवारों का चिराग उसके पति के कारण बुझ गया था। जालपा का त्याग, समर्पण एवं सेवा भाव देखकर रमानाथ चकित हो जाता है और उसके द्वारा दी गई झूठी गवाही का सच अदालत के सम्मुख बताने को राजी हो जाता है। जालपा के ह्रदय में रमानाथ के प्रति प्रेम, समर्पण तथा उन निर्दोष एवं गरीब परिवारों के प्रति दया भाव तथा सेवा का अन्तर्द्वन्द्व हमें उस समय देखने को मिलता है, जब वह जोहरा से कहती है– ''मैं अदालत को ऐसा सबूत दे सकती हूँ कि फिर मुखबिर के शहादत की कोई हकीकत ही नहीं रह जायेगी, पर मुखबिर को सजा से नहीं बचा सकती। बहन, इस दुविधा में पड़ी नरक का कष्ट झेल रही हूँ। न यही हो सकता कि इन लोगों को मरने दूँ और न यही हो सकता कि रमा को आग में झोंक दूँ।''[13] अन्ततः जालपा के प्रेम, समर्पण एवं त्याग, के कारण निर्दोष परिवार एवं पति दोनों को बचा लेती है।

इसी' उपन्यास की एक अन्य नारी पात्र जोहरा का त्याग एवं प्रेम भी प्रशंसा योग्य है। वह एक वेश्या थी, परन्तु अपने प्रेम एवं समर्पण से वह पाठकों के मन में अमिट छाप छोड़ जाती है। कलकत्ता की पुलिस जोहरा को रमानाथ का मनोरंजन करने के लिए बंगले पर लाती है, परन्तु धीरे–धीरे दोनों के बीच प्रेम हो जाता है और जोहरा रमानाथ की प्रेमिका बन जाती हैं। वह रमानाथ की कमजोरी नहीं, बल्कि ताकत बनती है। वह जालपा का पता लगाती है और अदालत में रमानाथ को बेगुनाह साबित करती है। जोहरा के वजह से ही रमानाथ पुनः अपने परिवार के साथ खुशहाल जीवन जी सका। वह जालपा एवं रमानाथ के परिवार का हिस्सा बन जाती है और उनकी सेवा करते हुए रमानाथ के प्रति अपने निष्काम प्रेम को निभाती है। जोहरा के त्याग एवं समर्पण के संदर्भ में प्रेमचन्द लिखते हैं– ''जोहरा ने अपनी सेवा, आत्मत्याग और सरल स्वभाव से सभी को मुग्ध कर लिया था। उसकी सारी कामनाएँ, सारी वासनाएं सेवा में लीन हो गयीं।'' [14] प्रेमचन्द स्त्रियों को पुरुषों से श्रेष्ठ मानते थे और इसी में वे स्त्री पुरुष का कल्याण समझते थे।

आज भारतीय समाज स्त्रियों को सशक्त बनाने की जिस क्रांतिकारी दौर से गुजर रहा है उस स्त्री को प्रेमचंद बहुत पहले ही सशक्त कर चुके थे। प्रेमचंद नारी को समाज में वह जैसी है बिल्कुल उसी रूप में दिखाते हैं। वहां नारी को अबला, सबला और विद्रोही सभी रूपों में दिखाते हैं। इस तरह प्रेमचंद नारी समस्या को यथार्थ रूप में दिखाकर उसे सशक्त बनने को प्रेरित करते हैं।

उद्देश्य– चेतना का अर्थ बताते हुए, स्त्री चेतना का दर्शन करना स्त्री चेतना स्वस्थ समाज के लिए अति आवश्यक है। एक मानवीय इकाई के रूप में सभ्यता और संस्कृति के सर्वांगीण विकास में स्त्रियों की भागीदारी समाज के लिए महत्वपूर्ण है। प्रेमचंद के उपन्यासों के स्त्री पात्रों के माध्यम से स्त्री विमर्श के विभिन्न आयामों से परिचित करना इस आलेख का मुख्य उद्देश्य है।

निष्कर्ष– प्रेमचंद ने स्त्री जीवन के विभिन्न गतिविधियों का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। स्त्रियों की दयनीय स्थिति का चित्रण कर उन्हें ऊपर उठने के लिए नई दिशा, सोच दी है। उन्होंने पहले स्त्री की समस्याओं का चित्रण किया, परतु धीरे–धीरे स्त्री का मुखर, विकासात्मक एवं जागरूक रूप दिखाई देता है। वे समाज की रूढ़ियों का खुलकर विरोध करती हैं, वही राजनीति में भी बढ़–चढ़कर हिस्सा लेती है। प्रेमचंद का मूल मकसद स्त्रियों की विभिन्न समस्याओं का बोध करा कर, उन्हें सचेत एवं जागरूक करना था ताकि वह अपने सम्मान की लड़ाई खुद लड़ सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिंदी साहित्य कोश– भाषा १, पारिभाषिक शब्दावली, पृष्ठ संख्या 247, ज्ञान मंडल लिमिटेड, 2007.
2. अरविंद जैन, औरत होने की सजा, पृष्ठ संख्या– 20.
3. सिमोन द –बोउआर– द सेकेंड सेक्स।
4. सिन्हा, डॉ. सुरेश, उपन्यासकार प्रेमचंद, लेख – प्रेमचंद और उनकी नायिकाएं, पृष्ठ संख्या– 145.
5. प्रेमचन्द गोदान, प्रकाशक मनोज पब्लिकेशन्स बुराड़ी, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 84.
6. वही पृ. संख्या– 89.
7. वही पृ. संख्या– 99.
8. प्रेमचंद कर्मभूमि, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ संख्या– 168.
9. वही पृष्ठ संख्या 177
10. प्रेमचंद सेवासदन, भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार, नई दिल्ली, 2016, पृष्ठ संख्या– 218.
11. प्रेमचन्द निर्मला, रवि पब्लिकेशन्स मेरठ, पृष्ठ संख्या– 18.
12. प्रेमचन्द प्रतिज्ञा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण१ 2016 पृष्ठ संख्या– 24.
13. प्रेमचन्द गबन, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रकाशक 2019, पृष्ठ संख्या– 211.
14. वही, पृष्ठ संख्या– 228.

*****